पाठ्य सामग्री   प्राचीन इतिहास

B.A. Part-I, (Hon)

प्रथम पत्र

सिंधु घाटी सभ्यता में नगर निर्माण योजना का वर्णन करें ?

1986

1985-87

जिस तरह किसी मंजिल को पाने के लिए रास्ता जानना जरूरी है, उसी प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता में नगर निर्माण योजना से पहले उस सभ्यता की जानकारी जहाँ यह फूली-फली यह भी इसके लिए जानना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

बात 1856 ई० की है जान ब्रण्टन नामक एक अंग्रेज मुल्तान से लाहौर तक रेल की पटरी बिछवा रहा था। इसके लिए अच्छे पत्थर नहीं मिल रहे थे। पत्थरों की खोज के सिलसिले में उसने सिंधु के किनारे, हड़प्पा नामक एक गाँव के पास बड़ा टिला देखा। यह टिला क्या था पुरानी ईंटों का ढेर था हड़प्पा गाँव के लोग समय-समय इन्हीं ईंटों को अपने काम लेते थे। ये बहुत मजबूत थीं। ब्रण्टन ने पत्थरों बदले इन्हीं ईंटों का उपयोग में लाने लगा। ईंटों को साफ करके पर इसके नीचे से पत्थर की ईंटें निकली जो देखने में बहुत सुन्दर थी। उनपर हाथी, बाघ, साँड इत्यादी के चित्र भी बने थे। लेकिन कोई न पढ़ सका। इसके बाद लोग भूल गए पैसठ साल कोई कुछ न कह सका। 1922 ई० में राखाल दास बनर्जी और दयाराम साहनी हड़प्पा गाँव की टिले की खुदाई शुरू की उसके नीचे से निकली हमारे देश की प्राचीन सभ्यता की जीती जागती कहानी शुरू हुई।

अतः जिस तरह दजला और फरात नदियों की घाटि में मेसोपोटामिया की सभ्यता, नील नदी की घाटि में मिस्र की सभ्यता का उद्भव और विकास हुआ उसी तरह भारत के उत्तर भाग में पश्चिम में सिंधु नदि घाटि में उन्नत सभ्यता का विकास हुआ जिसे हम सिंधु सभ्यता या सैन्धव सभ्यता के नाम से पुकारते हैं। यह एक उच्चकोटि की सभ्यता थी जो कई अर्थों में मेसोपोटामिया, एलाम, मिस्र आदि सभ्यताओं से बढ़ी हुई थी।

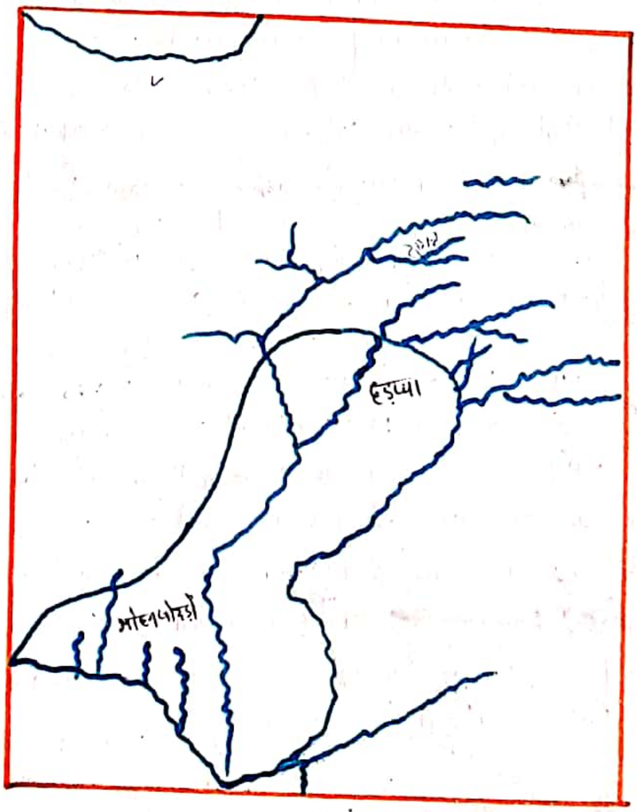

इस सभ्यता का प्रभाव गंगा यमुना, नर्मदा, और ताप्ती नदियों की घाटियों तक था। यह पूर्व में काठियावाड़ से पश्चिम में मकरान तक फैली हुई थी।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त खण्डहरों और इमारतों को देखने से पता चलता है कि वहाँ का नगर निर्माण एक योजना के तहत हुआ था। प्राप्त खण्डहरों और इमारतों से हम सिंधु सभ्यता की राजपथ चौड़ी गलियां, सफाई का उत्तम प्रबंध, गंदा पानी निकालने की लम्बी चौड़ी नालियाँ, सार्वजनिक स्नानागार, कुआँ, मकानों में दरवाजा खिड़कियों का प्रबंध आदि इस बात का प्रमाण है कि उस समय नगर का निर्माण एक निश्चित योजना के अनुसार होता था।

अतः अब हम उनका वर्णन किये रहे हैं।

1. मकान : ⟶ खुदाई से छोटे बड़े सभी प्रकार के मकान पाये गये हैं। मकानों के निर्माण में सादगी और उपयोगिता पर अधिक ध्यान दिया जाता था। मकानों के अब तक जो अवशेष मिले हैं इससे यह स्पष्ट होता है कि भवनों का निर्माण एक योजनाबद्ध तरीके से होता था। सड़कों के दोनों किनारे पर इमारतें बनाई जाती थी। जिस समय मिस्र के निवासी पक्की ईंटों के प्रयोग से अनभिज्ञ थे उस समय सिंधु घाटी के निवासी पक्की ईंटों का प्रयोग मकान निर्माण में बड़े पैमाने पर करते थे। ईंटें छोटे तथा बड़े आकार की होती थी। नगर के रक्षा के लिए उसके चारों ओर दिवार खड़ी की जाती थी। मकान कई मंजिले होते थे जिनमें उपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनाई जाती थी। प्रत्येक घर में पाकशाला, स्नानगृह, शौचालय, नालियां तथा कुएं का प्रबंध रहता था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में दो प्रकार के मकान मिले हैं। इन अवशेषों से पता चलता है कि बड़े मकानों में अमिर लोग और छोटे मकानों में समाज के गरिब लोग रहते थे। प्रत्येक घर में एक आँगन और दो कमरे होते थे। ऐसे मकान का क्षेत्र 56 फीट x 30 फीट है। दिवालों पर चुना और मिट्टी से पलस्तर किये जाते थे। मकान के निचले भाग में दरबारों और नौकरों के रहने के लिए अलग कमरे थे।

2. मजदूरों के मुहल्लें : ⟶ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में कुछ ऐसे मकान मिले हैं जो संभवतः मजदूरों के मुहल्ले थे। मोहनजोदड़ो में इस प्रकार के सोलह मकान मिले हैं। इनमें प्रत्येक का क्षेत्र 20 फीट x 12 फीट है। हड़प्पा में इस तरह के दो कमरे वाले चौदह मकान मिले हैं।

3. सड़क : ⟶ सड़कों का निर्माण भी एक निश्चित योजना के अनुसार होता था। सड़के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की ओर जाती थी। सबसे बड़ी सड़क की चौड़ाई 30 फीट थी। सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। सड़क का सम्बंध गलियों से था। गलियाँ भी 3 से 7 फिट तक चौड़ी होती थी। गलियों की साफ रखने की व्यवस्था थी।

4. नालियाँ : ⟶ मकान और नगर को साफ रखने के लिए नालियों की जैसी सुन्दर व्यवस्था थी। प्रत्येक सड़क और गलियों में नाली बनी होती थी। नालियां अठारह इन्च तक गहरी होती थी। प्रत्येक घर का नाली का सम्बंध सड़क की नाली से रहता था, जो मकान के गन्दे पानी को बाहर करती थी। बिच २ में पानी रोकने के लिए छोटी २ खाइयाँ भी बनी हुई थी। नालियाँ पक्की ईंटों की बनी होती थी। वर्षा के पानी को शहर से बाहर निकालने के लिए बड़ी २ नालियाँ बनायी गयी थी। कम चौड़ी नालियाँ ईंटों से और चौड़ी नालियाँ पत्थरों के टुकड़ों से ढकी होती थी। उपर की मंजिल का गन्दा पानी निचे लाने के लिए मिट्टी के पाइपों का प्रयोग किया जाता था।

गार्डन चाइल्ड ने जल निकास प्रणाली की प्रशंसा करते हुए कहा है कि "गलियों की सुन्दर पंक्तियाँ और नालियों का उत्तम प्रबंध तथा उनकी सतत स्वच्छता इस बात का संकेत देती है कि यहाँ कोई नियमित नगर-शासन था और वह अपना काम सावधानी से करता था।

5. कुओं का प्रबंध : ⟶ पानी की सुविधा के लिए कुओं की भी व्यवस्था थी। प्रत्येक घर में कुआं था। इसके अलावे सार्वजनिक कुएं का भी प्रमाण मिलता है। खुदाई से कुछ ऐसे कुएं मिले हैं जिनकी चौड़ाई दो फिट से सात फिट तक है।

6. स्वास्थ्य और सफाई : ⟶ सिंधु घाटी की एक मुख्य व्यवस्था सफाई थी। स्वास्थ्य और सफाई पर पुरा ध्यान दिया जाता था। घरों तथा नगरों के गन्दे पानी को निकालने के लिए छोटी तथा बड़ी नालियाँ बनी हुई थी। मकान का कूड़ा-करकट रखने के लिए जगह-जगह कूड़ेदान की व्यवस्था थी।

Scanned with CamScanner

7. स्नानागार :→ खुदाई से अब तक जितने भी भवनों के अवशेष मिले हैं, उनमें मोहनजोदड़ो के दुर्ग का विशाल स्नानागार विशेष महत्वपूर्ण है। यह एक आयताकार तलाब है जो 39 फीट लम्बा, 23 फीट चौड़ा और स्नानागार में पानी भरने और निकालने के लिए रास्ता बना हुआ था। बताया जाता है कि स्नानागार महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठानों के लिए होता था। स्नानागार पक्की ईंटों का बना हुआ था। निचे जाने के लिए सिढ़िया बनी हुई थी।

8. सार्वजनिक भवन :→ खुदाई से सार्वजनिक एवं राजकीय भवनों के अवशेष मिले हैं। मोहनजोदड़ों में एक विशाल भवन के अवशेष मिले हैं, जिसकी लम्बाई 230 फीट और चौड़ाई 78 फीट थी। दो विशाल आंगन, भंडागार और मृतों के कक्ष से सुसज्जित यह भवन लोगों के धार्मिक एवं राजनितिक जीवन का केन्द्र रहा होगा। मोहनजोदड़ो में सड़क के किनारे कई-2 सार्वजनिक भोजनालय के अवशेष मिले हैं।

9. बाजार :→ अनाज रखने के लिए बड़े-2 गोदाम बनाये जाते थे। सिंधु घाटी के लोगों का व्यापार-सम्बंध दूर-2 देशों से था। इससे पता चलता है कि व्यापारिक वर्ग समाज का समृद्ध वर्ग था। प्रत्येक नगर में नगरवासियों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाजार थे। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में सड़कों किनारे कुछ ऐसे मकान मिले हैं जहाँ सम्भवत: खुदरा व्यापारी अपने समान बेचते थे।

10. किलाबंदी :→ नगरों की सुरक्षा के लिए उसे चारों ओर से मजबूत दिवारों से घेर दिया जाता था। हड़प्पा मोहनजोदड़ो की किलाबंदी काफी मजबूत थी। दिवार कच्ची ईंटों की बनी होती थी, लेकिन बाहर से पकाई ईंटों से किलों की दिवार को मजबूत बनाया जाता था। हड़प्पा के किले की दिवार 40 फीट और 36 फीट ऊंची थी।

Scanned with CamScanner

'पाठ्य सामग्री' प्राचीन इतिहास

B.A. Part-I, (Hon's)

प्रथम पत्र

✓ सिंधु घाटी सभ्यता की सामाजिक और आर्थिक जीवन का वर्णन करें?

1985-87

खुदाई से प्राप्त अवशेषों के आधार पर ही हम सिंधु घाटी के निवासियों के सामाजिक जीवन की कल्पना कर सकते हैं। सिंधु सभ्यता में वैदिक युग की तरह समाज में वर्ण व्यवस्था नहीं थी। लेकिन सिंधु घाटी के समाज चार भागों में विभक्त थे — विद्वान, योद्धा, व्यापारी और श्रमजीवी। समाज की इकाई परिवार थी और समाज का ढाँचा मातृसत्तात्मक था। समाज में विभिन्न पेशों के लोग रहते थे जैसे:—> पुजारी, राजकीय कर्मचारी, ज्योतिषी, जादूगर, वैद्य, व्यवसायी, कुम्हार, बढ़ई, सुनार आदि।

अतः हम अब यहाँ के सामाजिक जीवन का वर्णन कर रहे हैं:—

1. भोजन:—> खुदाई से प्राप्त अवशेषों के आधार पर यह बताया गया है कि सिंधु सभ्यता के निवासी शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते थे। वे फलियाँ, खजूर, तरबूज, नींबू, फल, सब्जी, दूध, घी, मिठाई, रोटी, छुहाड़ा खाते थे। मांसाहारी लोग गाय, भेड़ और दूसरे जानवरों के गोश्त, मछलियाँ और अंडे खाते थे। मारने काटने के लिए पत्थर के औजार बनाये जाते थे। भोजन में दालों और सब्जियों का भी स्थान है।

(2)

2. बर्तन:—> कुम्हार चाक पर बर्तन बनाते थे। बर्तनों में कटोरे, कटोरियाँ, कलश, गड़, सुराहियाँ प्रमुख हैं। खुदाई से ताम्बे और पत्थर के बर्तन मिले हैं जिसमें प्याला, चम्मच, थाली, तश्तरी आदि के प्रमाण मिले हैं।

3. मकान:—> सिंधु सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता मकान कला है। मकान योजनानुसार बनाया जाता था। घर का प्रमुख कमरा मेज, कुर्सियों और स्टूलों से सजाया जाता था। रोशनी के लिए मिट्टी के लैम्प जलाये जाते थे। फर्श पर चटाई बिछाया जाता था। सोने के लिए पलंग का व्यवहार किया जाता था।

4. स्त्रियों की दशा:—> परम्परागत परिवार ही समाज की इकाई था प्राप्त अवशेषों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि सिंधु सभ्यता का समाज मातृसत्तात्मक था। सिंधु सभ्यता के निवासी अनेक देवी देवताओं की पूजा करते थे। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समाज में स्त्रियों को विशेष सम्मान था और माता के रूप में नारी का स्थान बड़ा ही आदरणीय था। समाज में पर्दा-प्रथा नहीं थी। स्त्रियाँ विलासप्रिय होती थी धार्मिक और सामाजिक उत्सवों में स्त्री पुरुष के समान भाग लेती थी।

5. आभूषण:—> उत्खनन के प्राप्त अवशेषों के आधार पर हम वहाँ के निवासियों के आभूषण का पता लगाते हैं। सिंधु-सभ्यता के निवासी आभूषणों के प्रेमी होते थे। सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष आभूषण पहनते थे। आभूषण सोना, चाँदी, हाथीदाँत, बहुमूल्य पत्थर, रत्न, ताम्बा, घोंघा तथा पक्की मिट्टी के बनाये जाते थे। हीरा पन्ना, मूंगा और लाल आदि पत्थरों से आभूषण बनाये जाते थे। आभूषणों में हार, बाजूबन्द, अंगूठियाँ, कड़ा और चूड़ियाँ स्त्री और पुरुष दोनों पहनते थे। स्त्रियाँ कर्णफूल, पायल भी पहनती थी। धनी लोग सोना, हाथी-दाँत, बहुमूल्य आभूषणों का व्यवहार करते थे, लेकिन गरीब लोग ताम्बा, हड्डी, मिट्टी, घोंघा, सीप आदि के आभूषण पहनते थे।

6. श्रृंगार-प्रसाधन:—> उत्खनन से प्राप्त सामग्रियों से सिंधु सभ्यता के निवासियों के सिंगार करने की विभिन्न वस्तुओं का पता लगाते हैं। सिंधु सभ्यता के निवासी बाल सवारने के कला में अद्वितीय थे। केश सवारने से सम्बंधित कंघी और शीशे भी मिला है। वहाँ के निवासी अनेक प्रकार से केश सजाते थे। स्त्रियाँ अपने बालों को लटकाती भी थी, जुड़ा भी बाँधती थी और उसमें फीता भी बाँधती थी। पुरुष भी अपने केश बड़े रखते थे। केश विन्य से बनाते थे वे दाढ़ी और मूछ भी रखते थे। कुछ लोग दाढ़ी और मुच्छ नहीं भी रखते थे। कभी-2 लोग सर भी मुड़वाते थे। क्योंकि खुदाई से कुछ खिलौने मिले हैं, जिनके सर मुड़े हुए हैं। स्त्रियाँ अपनी सौंदर्य बढ़ाने के लिए काजल, पावडर, सिंदुर, अलक्तजक (होठ रंगने के लिए) तेल आदि का प्रयोग करती थी।

मनोरंजन के साधन:—> संगीत, नृत्य, खेलकूद, पशुयुद्ध, गेंद, गोली, चौपड़, पासा तथा

Scanned with CamScanner

शतरंज मनोरंजन के साधन थे। पत्थर का बना हुआ पासा प्रयाप्त मात्रा में मिला है। पक्षि और जानवरों का शिकार करना भी लोगों के मनोरंजन का एक साधन था। दो तावीजों पर अंकित दृश्यों में एक हरिन और एक जंगली बकरा को तीर से मारे जा रहे है। मछली फसाना भी उन लोगों का एक मनोरंजन का साधन था। मछली फसाने के लिए काँटे का इस्तेमाल किया जाता था। साढ़ो की लड़ाई द्वारा भी सिंधु सभ्यता के लोग अपना मनोरंजन करते थे। घर में चिड़ियाँ पाली जाती थी और उन्हें लड़ा कर अपना भोजन करते थे।

बच्चों के मनोरंजन पर भी ध्यान दिया जाता था मिट्टी के पशुपक्षी, पुरुष-स्त्री गाड़ी झुनझुना, और सिटियाँ भी बड़ी संख्या में मिली है। मिट्टी की छोटी-2 गाड़िया और कुर्सीयाँ भी मिली है। उस समय ताम्बे और पित्तल के भी खिलौने बनाये जाते थे। वर्षा और धूप से बचने के लिए छतरी का प्रयोग करते थे।

8 वेष-भूषा :——> मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त मूर्तियों और मुद्रों पर अंकित चित्रों से ही वहां के निवासियों के वेष भूषा का पता लगाया जाता है। स्त्रियों और पुरुषों के वस्त्र में कुछ अंश तक समानता थी। विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहनते थे। सिंधु घाटी में कुछ नंगी प्रतिमाएं भी मिली है, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि नग्न रहने की भी कुछ प्रतिमाएं प्रचलित थी। गर्मी और सर्दी दोनो से बचने के लिए सूती और ऊनी वस्त्र पहनते थे। मोहन जोदड़ो में बहुत सूई मिली है, इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग कपड़ों को सिलाकर पहनते थे। पुरुष कमीज जैसा वस्त्र पहनते थे। स्त्रीया साड़ी पहनती थी। स्त्रियाँ कमर में मेखला का व्यवहार करती थी। स्त्रियाँ सिर पर एक विशेष प्रकार के परिधान करती थी, जो पंखे की भांति पीछे की ओर से उठा रहता था।

9. औषधि :——> खुदाई से आबनूस की तरह एक काला पदार्थ मिला है जिसे पानी में घोल देने पर पानी का रंग बादामी हो जाता था। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि यह शिलाजीत है। उसका प्रयोग दवाई के रूप में होता था। हड्डी के चूर का प्रयोग दवा के रूप में होता था। मूंगाँ और नीम की पत्ति का दवों के काम में आती थी। समुद्री फेन भी औषधी के रूप में आता था।

10. मृतक संस्कार :——> सिंधु प्रदेश में तीन प्रकार से मृतक-संस्कार की प्रथा थी।

(क) पूर्ण समाधि :——> इस प्रथा के अनुसार शव को शरीर को ज्यों का त्यों गाड़ दिया जाता था।

(ख) अर्ध समाधि :——> इस प्रथा के अनुसार पहले शवों को खुला छोड़ दिया जाता था और पशु-पक्षि के खा चुकने के बाद शेष बचे भाग को पृथ्वी में गाड़ दिया जाता था।

(ग) दाहकर्म :——> इस ~~प्रथम~~ प्रथा के अनुसार शवों को अग्नि संस्कार कर दिया जाता था और फिर उसे भस्म करके गाड़ दिया जाता था।

मेसोपोटामियाँ और मिश्र की सभ्यता की तरह सिंधु सभ्यता में भी शवों के साथ जीवन की सभी आवश्यक वस्तुओं को गाड़ने की प्रथा थी। जो खुदाई से शवों के साथ आभूषण, अन्न-वस्त्र, पताके आदि मिले है।

Scanned with CamScanner

आर्थिक जीवन :→

कृषि :——→ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से यह स्पष्ट होता है कि सिंधु घाटी में लोगों की स्थिति संतोष जनक थी। सिंधु घाटी की खुदाई में समृद्ध गाँवों और नगरों के अवशेष मिले हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे विशाल नगरों का होना ही इस बात को प्रमाणित करता है कि नगरों की आबादी घनी होगी और इस आबादी को खिलाने के लिए वहाँ प्रचुर मात्रा में भोजन सामग्री भी उपलब्ध होगी। सिंधु घाटी उपजाऊ थी। नगर की समृद्धि और समुचित व्यवस्था वहाँ के लोगों की आर्थिक सम्पन्नता की द्योतक है। सिंधु देश में वर्षा अधिक होती थी और फसल भी अच्छी होती थी वहाँ के निवासी गेहूँ, जौ, मटर, तिल, सरसों की खेती करते थे। इसके अतिरिक्त खजूर, तरबूज, नारियल, केला, निम्बू, अनार फल भी उपजाए जाते थे। यहाँ कपास की खेती होती थी। अनाज पीसने के लिए चक्की और कूटने के लिए ऊखल का प्रयोग होता था।

यहाँ के लोग खेती के लिए हल बैल का प्रयोग नहीं करते थे, किन्तु यह पता चलता है कि उनकी खेती फावड़े पर आधारित थी। फसल काटने के लिए हँसियों का प्रयोग करते थे। खेतों को सिंचाई के लिए नहरों की व्यवस्था नहीं थी। नदियों की बाढ़ से खेती होती थी।

पशुपालन :——→ सिंधु सभ्यता के लोग खेती करने के साथ-2 पशु भी पालते थे। बैल, भैंस, बकरी, भेड़ आदि उनके पालतू पशु थे। वे कुत्ता और बिल्ली को भी पालतू पशु बना लिये थे। यहाँ के लोग गधे और ऊँट से भी परिचित थे। इन पशुओं का उपयोग बोझ ढोने के लिए होता था। घोड़े का अवशेष गुजरात के सुरकोतड़ा नामक स्थान से मिला है, लेकिन घोड़े का इस्तेमाल नहीं होता था। वहाँ के निवासी गेंडा और हाथी से भी परिचित थे। वे हंस, बतख, खरगोश, बंदर, हिरण, मुर्गी और तोता भी पालते थे। यहाँ के निवासी भोजन के लिए जंगली पशुओं का भी शिकार करते थे।

उद्योग-धन्धा :——→ इस काल में कृषि और पशुपालन के अलावा छोटी-2 दस्तकारियों का भी प्रमाण मिलते हैं। सिंधु घाटी के निवासी पत्थर के औजार का इस्तेमाल करते थे, लेकिन वे काँसे से परिचित थे टीन और ताम्बा मिलाकर काँसा तैयार किया जाता था। काँसे और ताँबे से कुल्हाड़ियाँ, छेनियाँ, छुरियाँ, तीर, आरियाँ आदि औजार बनाये जाते थे। सुनार सोना, चाँदी और कीमती पत्थरों से आभूषण बनाते थे।

धातु काल के अतिरिक्त शंख, सीप, घोंघा, हड्डी, हाथी दाँत का काम होता था। वहाँ के निवासी सोना-चाँदी, पत्थर, सीप और चिकनी मिट्टी से मकान बनाते थे। वे मकान बनाने की कला में प्रवीण थे।

इसके अलावे सिंधु घाटी के शहरों में अन्य उद्योग का विकास हुआ था।

(i) **वस्त्र उद्योग :—→** वस्त्र उद्योग उन्नत अवस्था में थी मोहनजोदड़ो की खुदाई से सूती कपड़े का टूकड़ा मिला है। कताई के लिए तकली का इस्तेमाल होता था। सूत कातने के लिए चरखे का इस्तेमाल होता था, जो की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। इससे साफ जाहिर होता है कि सूत कातना और वस्त्र तैयार करना उस समय एक घरेलू उद्योग था।

(ii) **बर्तन उद्योग :—→** कुम्हार चाक की सहायता से बर्तन बनाते थे बर्तनों पर चित्र अंकित किये जाते थे, तथा उन्हें चिकना और चमकीला बनाया जाता था।

इसके अलावे बढ़ई खिलौना तथा अन्य सामान तैयार करता था। इस काल का सबसे प्रमुख कला घर बनाना था, जो एक निश्चित ढंग से बनाई जाती थी। उस समय राजगिर महत्वपूर्ण कौशल था। इससे यह पता चलता है कि समाज में एक राजगिरों का स्थान था।

Scanned with CamScanner

व्यापार :→ सिंधु सभ्यता के लोगों का व्यापार दूर-दूर देशों तक फैला था। उनका व्यापार सुमेर, एलम, क्रीट, मिस्र आदि देशों के साथ व्यापार सम्बंध था। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र थे। सिंधु घाटी के निवासी जल और स्थल स्थल मार्ग से व्यापार करते थे। यहाँ के निवासी यातायात के लिए ऊँट, नाव, और बैलगाड़ी का प्रयोग करते थे।

यहाँ से अनाज, मिट्टी के बर्तन, सूती कपड़ा निर्यात किया जाता था और दूसरे देशों से आयात किया जाता था वह इस प्रकार है: ———

राजपूताना और बलुचिस्तान से : ——— ताम्बा।
अफगानिस्तान और फारस से : ——— टीन, सोना, चाँदी
कश्मीर से ——— लकड़ी,
मैसूर से ——— पत्थर,
दक्षिण भारत से ——— सोना
नीलगिरी से ——— धातु, लाल, पन्ना, मूंगा।
बलुचिस्तान और ईरान से ——— चाँदी
ईरान और अफगानिस्तान से ——— फीरोजा, लाजवर्त
खाड़ी से ——— सीप, कौड़ी, शंख,

यहाँ के निवासी माप तौल के लिए बटखरे रखते थे। माप तौल में सोलह को इकाई माना जाता था। तौलने के लिए बटखरे बड़ी संख्या में मिली हैं। हुण्डियों और साख की भी प्रथा प्रचलित थी। व्यापारी मुहर भी रखते थे। मुहर हाथी के दाँत और मिट्टी के होते थे। सड़कों के दोनों किनारों पर दुकान लगी रहती थी। व्यापार वस्तु विनिमय द्वारा होता था।

Scanned with CamScanner

पाठ्य सामग्री प्राचीन इतिहास

B.A. Part-I, (Hons)

प्रथम पत्र

B.A.

छठी शताब्दी ई० पू० भारत की राजनैतिक अवस्था :— xxxxxx xx xx

छठी शताब्दी ई० पू० भारतीय इतिहास में ही नहीं अपितु विश्व इतिहास में एक अपूर्व शताब्दी थी। भूमध्य सागर से प्रशान्त महासागर तक मानव मस्तिष्क में खलबली मची हुई थी। इस युग के महापुरुषों ने वर्तमान प्रति के प्रति असंतोष प्रकट किया और उन्हें नया आलोकन दिया वे लोग जीवन के महान आदर्शों को लेकर आगे बढ़ रहे थे उसी समय भारत में नया युग का प्रादुर्भाव हो रहा था इस प्रकार का विरोध होना स्वाभाविक था। समूचा भारत दो मूल्यों तत्वों से जुड़े हो रहे पूरे समाज में नया जिस आन्दोलन का होना जरूरी था। ईसा० पू० छठी शताब्दी का अपना एक अलग महत्व है। इस युग में हम सर्वप्रथम राजनैतिक अवस्था का वर्णन करेंगे। इसका प्रधान केन्द्र कई शताब्दियों तक मगध बना रहा है। क्योंकि सोलह महाजनपदों में मगध का सबसे ऊँचा स्थान था।

सोलह महाजनपद :— वैदिक काल में राजनैतिक संगठन की जो रूप रेखा बनी उसी का वर्णन सोलह महाजनपदों अलग-अलग किया गया है। आर्यों का प्रसार काफी दूर-दूर तक फैला हुआ था। जिसका वर्णन हमें ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। सोलह महाजनपदों का वर्णन करीब-करीब हर प्राचीन इतिहास में अंकित है या मिलती है। इस युग को सोलह महाजनपद युग भी कहा जाता है। इसके कई नाम हैं जिसका वर्णन हम अलग-अलग कर रहे हैं। महाजनपदों के अलावा गणराज्यों का भी उल्लेख मिलता है।

(1) अंग :→ यह मगध के ठीक पूर्व में था। इसकी राजधानी चम्पा थी बिहार का चम्पा नगर आज भी इसी धरोहर के रूप सुरक्षित है। चम्पा उस समय भारत की सबसे प्रसिद्ध नगरों में से थी। इस राज्य ने विशेष उन्नति की चम्पा कला, संस्कृति, सामाजिक तथा व्यापार के केन्द्रों के रूप में थी। लेकिन बाद में इसकी शक्ति का ह्रास हुआ। इसका मगध से हमेशा संघर्ष होता रहा अन्त में मगध ने इस राज्य को पराजित कर अपने में मिला लिया। बुद्ध कालीन छः (6) बड़े नगरों में चम्पा की चर्चा की गई है। इस लिए चम्पा का प्राचीन काल में निश्चित ही महत्व रहा होगा।

(2) मगध :→ मगध की राजधानी राजगृही थी। यह भी चम्पा की तरह एक स्थान रखती है। उस समय राजगृही अपने वैभव के लिए प्रसिद्ध था। बृहद्रथ वंश का राज्य इस समय तक समाप्त हो गया था। इसके बाद मगध में कई राजवंशों ने शासन किया। प्रारम्भ में मगध का उतना महत्व नहीं था। लेकिन बाद में उसने बड़ी उन्नति की मगध में पटना, गया तथा गोरखपुर के अनेक जिले सम्मिलित थे। जो आज मगध के सभी प्रान्तों से बढ़कर क्षेत्र राजगृही को किया जाता है। क्योंकि जरासंध राजसंघ का अखाड़ा वहीं पर था। अंग का शासक ब्रह्मदत्त और उसके राजाओं ने मगध के राजाओं ने हरा दिया था लेकिन अन्ततोगत्वा मगध पुनः उस पर अपना अधिकार कर लिया।

(3) काशी :→ इसकी राजधानी वाराणसी थी। जो वरुणा और अस्सी के तट पर जहाँ दोनों नदियों का संगम होता है वहीं पर वाराणसी बसा हुआ है इस लिए उसका नाम भी वाराणसी पड़ा यह नगर बारह योजनाओं में सबसे प्रसिद्ध और विस्तृत थी। जैसा की प्राचीनतम ग्रन्थ बताता है कि यह भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसा हुआ है इस लिए धार्मिक दृष्टि कोण से इस काशी की महत्व स्वाभाविक ही लगता है साथ ही साथ शिक्षा के केन्द्रों में भी काशी का अपना एक अलग ही गौरव है धार्मिक और शिक्षा के केन्द्र होने के चलते इसकी गणना भारत में ही नहीं विश्व के प्राचीन शहरों में इसका दर्जा दिया जाता है।

(4) कौशल :→ यह उत्तर प्रदेश की मध्य में कोशल राज्य स्थित था। उसकी राजधानी श्रावस्ती थी। अयोध्या के महत्व निरन्तर घट कम और ज्यादा होता रहा जिसका आधुनिक नाम फैजाबाद है। जिसका महत्व दिनो दिन बढ़ता जा रहा था। काशी से इसका सम्बंध अच्छा नहीं था। कभी-कभी संघर्ष होने का संकेत मिला हुआ है। लेकिन बाद में आपस में नाकोता हो जाने के चलते स्थिति पूर्वतः पायी गयी। कौशल के एक राजा कंस को पाली ग्रंथों में बारह सिंहों के नाम पाया जाता है। उसी के काशी को जीतकर कोशल में मिला लिया था। शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु इसी कोशल राज्य के अन्तर्गत थी इसको धार्मिक महत्व से जाना जाता है।

(5) वृज्जि :→ यह राज्यों का एक संघ था। जिसमें लिच्छवी विदेह और ज्ञातृक विशेष महत्वपूर्ण थे ये सभी उत्तर बिहार में थे। बुद्ध के समय तक वृज्जि संघ गणतंत्रिय शासन पद्धति थी। पाणिनी और कौटिल्य ने वृज्जियों का उल्लेख किया है। इस संघ की राजधानी वैशाली थी। सभ्यता और संस्कृति का महान केन्द्र था वृज्जि शासन में प्रत्येक गाँव के सरदार को ही राजा कहा जाता था। राज्यों के सामूहिक कार्य का विचार एक सदस्य द्वारा होता था इसमें गाँव के प्रमुख व्यक्ति ही सदस्य बनते थे।

(6) मल्ल :→ वृज्जियों के पड़ोसी मल्ल थे। उनकी भी गणराज्य था। इनका राज्य वृज्जियों के पश्चिम और कोशल के पूर्व में था। पावा और कुशी नगर इसके कस्बे थे। ये लोग दो भागों में विभक्त थे। एक भाग कुशी नगर में रहता था और दूसरा पावा में। महाभारत में मल्ल के दो सदस्यों का उल्लेख है।

Scanned with CamScanner

चेदी :→ आधुनिक बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत यह राज्य था। इसकी राजधानी शक्तिमती थी। इस राज्य का उल्लेख महाभारत में भी किया है। शिशुपाल यहीं का ही राजा था जिसका उल्लेख जातकों में मिलता है।

वत्स :→ काशी के पश्चिम ही वत्स जनपद था। पुराणों के अनुसार राजा निचक्षु ने जमुना नदी के तट पर अपने राज्य की स्थापना की थी। जब हस्तीपुर के राजा का पतन हो गया था तब इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। यह भी व्यापार मार्ग पर स्थित थी इस लिए इसका महत्व विशेष था और साथ ही साथ आवन्ती के साथ इसका संघर्ष चलता रहता था।

(1) **कुरु :→** दिल्ली और मेरठ के समीप ही यह राज्य था। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी इसके अन्तर्गत उ... संघ पं इसका उल्लेख जातकों में मिलता है। जैन ग्रन्थों के अनुसार यहां पर इक्ष्वाकु नामक राजा का भी उल्लेख मिलता है। प्रारम्भ में यहां राजतंत्र था इसके बाद गणतंत्र की स्थापना हुई यहाँ भारत वर्ष का एक महान तथा पवित्र स्थल माना माना गया है। इस लिये इसे कुरु-धाम कहते हैं। इसके बाद कुरु धाम जातक में इसे एक व्यापारीक स्थल भी माना गया है।

(10) **पंचाल :→** कुरु और पंचाल मिलकर शायद एक ही राष्ट्र गिने जाते थे क्योंकि कुरु राष्ट्र की राजधानी कभी इन्द्रप्रस्थ कापील नगर और कभी उत्तर पंचाल नगर कहा जाता है। पंचाल देश कौशल और वत्स के पश्चिम स्थित तट कुरु उसके पश्चिम क्षेत्र भूमि के उत्तर था ये दोनो प्राचीन जनपद थे।

(11) **मत्स्य :→** मत्स्य आधुनिक अलवर भरतपुर और जयपुर राज्यों कि भूमि पर स्थित था इसकी राजधानी विराट नगर थी। मत्स्य पहले तो कुरुओं के अन्तर्गत थी लेकिन बाद में मगध के अधिक हुआ।

(12) **सुरसेन :→** कुरु के दक्षिण और पश्चिम तट भाग और यमुना के दाहिने सुरसेनों का राज्य था। जिसे आधुनिक काल में मथुरा के नाम से जाना जाता है। यह सुरसेनो की राजधानी थी। इसका उल्लेख महाभारत में भी मिलता है।

(13) **अस्सक :→** यह गोदावरी के तट पर स्थित था। इसकी राजधानी पतोन नाम से प्रचलित थी। इस राज्य के राजा इक्ष्वाकु वंश के थे इसका आवन्ती के साथ निरंतर संघर्ष चलता रहा था। धीरे-2 राज्य आवन्ति के अधीन हो गया।

(14) **अवन्ति :→** आधुनिक मालवा प्रान्त ही प्राचीन काल का आवन्ती राज्य थी। इसके दो भाग थे उत्तरी अवन्ति और दक्षिणी अवन्ति। उ० अवन्ति की राजधानी उज्जैन, द० अवन्ति की राजधानी माहीष्मति थी। इस समय अवन्ति राज्य काफी शक्तिशाली थी।

(15) **गंधार :→** यह आधुनिक अफगानिस्तान की पूर्वी भाग थी। इसका प्रसार पश्चिम पंजाब और काश्मीर तक था और इसकी राजधानी तक्षशिला थी। आवन्ति और गंधार के बिच कई बार युद्ध हुए थे। और मगध राज्य का भी इस राज्य के साथ मित्रता का सम्बंध था। तथा शिला में एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। अतः विद्या का केन्द्र होने के कारण गंधार प्रख्यात था।

(16) **कम्बोज :→** गँधार काश्मीर के उत्तर आधुनिक पामीर का पठार तथा उसके पश्चिम का प्रदेश कम्बोज जनपद कहलाता था। हटक इस राज्य की राजधानी थी। कम्बोज और गंधार के नाम करीब-2 साथ ही मिलते हैं। द्वारिका भी इस राज्य में पड़ती थी।

आर्थिक पृष्ठ भूमि :→

महाजन पदों के विकास के पिछले तत्कालीन आर्थिक विकास तथा आर्थिक प्रगति का होना निश्चित है। इस काल में 60 ऐसे नगर का उल्लेख मिलता है जिसका विकास इसी के अन्तर्गत हुआ था। इस समय प्रमुख नगर गंगा, यमुना गंगा यमुना नदियों के आस-पास बसे हुए मिलते हैं जैसे:— इन्द्रप्रस्थ, हस्तीनापुर, कौसाम्बी, पाटलीपुत्र

अतः में हम कह सकते हैं कि छठी शताब्दी ईसा पूर्व हमारे भारत के लिए एक नये युग का प्रदुर्भाव करता है, क्योंकि गंगा और यमुना और उसकी सहायक नदियों के तट पर कुछ-ऐसे नगरों का प्रादुर्भाव होता है जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक उनकी गरिमा बनी हुई है। छठी शताब्दी ई०पू० भारत की स्थिति सोहल महाजन पदों में अपना अलग-2 उत्थान और उपलब्धियों का रोल अदा करती है जैसे की अध्ययन के बाद हमें पता चलता है।

A.H.

بسم الله الرحمن الرحيم

छठी शताब्दी ई० पू० की राजनैतिक दशा

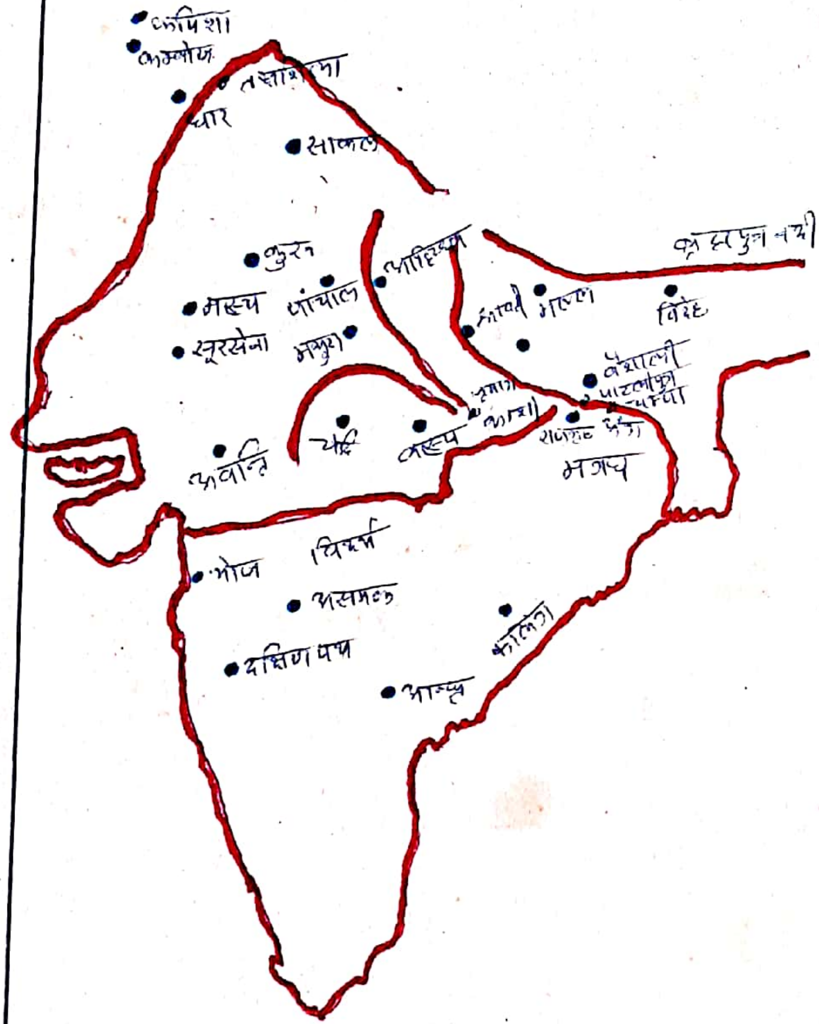

600 ई० पू० का प्राचीन भारत एवं षोडश महाजनपद